21/06/2021

B.A Subsidary Paper

Page No.: 1

Ques. द्वितीयक समूह की परिभाषा दें और इसके विशेषताओं का वर्णन करें।

Ans. द्वितीयक समूह (secondary Group): द्वैतीयक समूह की परिभाषा करते हुए राबर्ट बीरस्टीड (R. Bierstedt) ने कहा है कि "वे सभी समूह द्वितीयक है जो प्राथमिक नहीं है।" (secondary groups are all those that they are not Primary)

कूले (cooley) के मतानुसार वे वे समूह है जिनमें घनिष्ठता, प्राथमिकता तथा आदि प्राथमिक विशेषताओं का पूर्ण अभाव होता है। द्वैतीयक समूह के सदस्यों में कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं होता। एक दूसरे पर पड़नेवाला उनका प्रभाव अप्रत्यक्ष होता है। राजनीतिक पार्टियाँ, श्रम-संघ, राष्ट्र आदि द्वितीयक समूह के उदाहरण हैं। प्राथमिक समूह की तुलना में इन समूहों के अन्तर्गत भावनात्मक बन्धन बहुत कम होते हैं। द्वैतीयक समूहों का संगठन वैधानिक क्रिया आधार है।

मनुष्य का जन्म प्राथमिक समूहों में होता है लेकिन वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता है उसका संबंध द्वैतीयक समूह में होने लगता है। द्वैतियक समूह में प्रेम व अपनत्व की भावना का अभाव होता है। उनके सदस्यों के संबंध औपचारिक होते हैं। वे साथ में काम करते हैं, साथ भी रहते हैं लेकिन उनमें आत्मीयता का संबंध नहीं रहता है।

लैंडिस (Landis) के अनुसार- द्वितीयक समूह इस भीड़-जगत का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें ग्रामीण समूह के माता-पिता के अनुसार उनके बच्चे घर छोड़ने के बाद आते हैं। द्वितीयक समूह के हैं और अपने संबंधों में अपेक्षाकृत आकस्मिक और अवैयक्तिक होते हैं, क्योंकि द्वितीयक समूह व्यक्ति पर कुछ विशेष मांगें ही रखते हैं, वे उसकी निष्ठा का केवल थोड़ा सा भाग पाते हैं और आमतौर से उसका कुछ ही समय ध्यान चाहते हैं। इनमें संबंध आमतौर से परस्पर सहायक होने की अपेक्षा प्रतियोगी होते हैं॥

इस प्रकार द्वितीयक समूह में प्राथमिक समूहों जैसी स्वाभाविकता कहीं नहीं दिखलाई पड़ती। इसमें कृत्रिमता दिखलाई पड़ती है। इसके सदस्यों का व्यवहार औपचारिक होता है।

द्वितीयक समूहों की विशेषताएँ (Characteristics of secondary Groups) इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) इसमें शारीरिक निकटता आवश्यक नहीं है।
(2) इन समूहों का आकार बड़ा होता है।

(3) सदस्यों की संख्या भी अधिक होती है।

(4) सदस्य एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं होते हैं।

(5) यह स्वयं साध्य नहीं होते हैं इस कारण इनको विशिष्ट उद्देश्य समूह (Special Interest Group) के नाम से भी पुकारा जाता है।

(6) सदस्यों का उत्तरदायित्व सीमित होता है।

(7) निकट संबंधों का अभाव होता है।

(8) यह नियमों द्वारा चलते हैं।

(9) संबंध प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष होते हैं जैसे डाक, तार टेलीफोन, रेडियो, प्रेस आदि द्वारा संबंध स्थापित किये जाते हैं।

(10) इनका अस्तित्व अस्थायी होता है।

(11) सदस्यों में व्यक्तिवाद की भावना होती है।

DR Nishant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest faculty)
Dept of Sociology

Date- 21/06/2021